चित्रः तेजी ग्रोवर, फोटोः महेश बसेड़िया

मौसमी फलों से बनने वाले रंग

तेजी ग्रोवर

अगर तुम फलों, फूलों, पत्तियों, हल्दी वगैरह से रंग बनाओगे तो लोग ज़रूर पूछेंगे, "तुम्हारा चित्र कुछ दिनों में गायब नहीं हो जाएगा?"

मुझे भी लगा था कि मेरे चित्र महीने भर में अपने आप मिट जाएँगे। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। कुदरती रंगों से बने चित्र मेरे मित्रों के पास सालों से हैं। मैं कई बार उन्हें देखने उनके घर जाती हूँ। मेरे नाखूनों से तो अनार के छिलके का रंग छह महीने से नहीं गया है। मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। रंगों से खेलते हैं तो कपड़े और हाथ-पैर रंगे भी जाएँ तो क्या? फिर मैंने यह भी सोचा कि मान लो मेरे चित्र खुद-ब-खुद मिट भी जाएँ तो क्या हुआ। मुझे तो मज़ा लेना है, खुशी से अपना समय बिताना है। अगर मैं हवा, पानी, मिट्टी का नुकसान किए बिना यह सब कर सकती हूँ, तो मेरे चित्र सुबह से शाम तक मिट भी जाएँ तो कोई हर्ज़ नहीं!

इस बार मैं तुमको बताना चाहती हूँ कि मैंने फलों से रंग कैसे बनाया। मौसम के पहले जामुन मैंने चखे नहीं, कि मुझे उनसे चित्र बनाने की सूझ गई। बड़ी मुश्किल से मैंने खुद को जामुन खाने से रोका और तुरन्त रंग बनाने बैठ गई। मैंने दस बारह जामुन लिए और थोड़ा-सा पानी डालकर उन्हें उबाल लिया। रंग कुछ फीका-सा लगा तो मैंने आधा निकालकर उसमें फिटकरी की एक डली बस दो-तीन बार घुमा दी। और मुझे गाढ़ा जामुनी रंग मिल गया। फिर बाकी बचे रंग में भी फिटकरी घोल दी। को

फिटकरी की मात्रा घटाने-बढ़ाने से रंगत में फर्क आता चला जाएगा। याद है पिछली बार हमने हल्दी में खाने का सोडा मिलाकर एक रंग बनाया था। इस रंग को जामुनी रंग के ऊपर लगाओ और देखो कितना प्यारा-सा हरा रंग बनता है। जामुनी रंग में ज़रा-सा खाने वाला सोडा मिलाओ और रंगों के कमाल देखो। यह सुझाव मेरे दोस्त जावेद का था।

मुझे उम्मीद है कि अगस्त महीने की *चकमक* जब तुमको मिलेगी, गली में जामुन वाला तब भी घूमता हुआ मिल जाएगा। मैंने तो एक जामुन बेचने वाले से दोस्ती भी गाँठ ली है। शायद किसी दिन वह शहतूत या फालसे लेकर आएगा, तो मुझे कई और रंग मिल जाएँगे।

मेरी एक प्रिय कविता "पौधा तो जामुन" पढ़ना चाहोगे?

मैंने तेजी आँटी का लेख पड़ा और कुछ प्रयोग किए। मैंने तीन रंग बनाए।

पीला – हल्दी + पानी

बैंगनी – पत्ता + पानी + फिटकरी

गाढ़ा लाल – हल्दी + कपड़े धोने का सोडा

यह है मेरा बनाया एक चित्र

अनन्या शर्मा, पाँचवीं, भोपाल

पौधा तो जामुन

पौधा तो जामुन का ही था
लेकिन आए आम
पर जब खाया तो ये पाया
ये तो हैं बादाम

जब उनको बोया ज़मीन में
पैदा हुए अनार
पकने पर हो गए सन्तरे
मैंने खाए चार।

श्रीप्रसाद